सीबकथोर्न की खेती

सामान्य नाम	:	सीबकथोर्न
वानस्पतिक नाम	:	हिप्पोफी रहमेनोइडिस
कुल	:	एलीगनेयेसी
उपयोगी भाग	:	फल रस और तेल
सामान्य उपयोग	:	फल तथा तेल का उपयोग कैंसर तथा हृदय की बिमारियों में किया जाता है। इस फल के रस का प्रयोग ताकत की दवाई और कृमिहारी के लिए किया जाता है।

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड

आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

कमरा न. 309, तृतीय तल, आयुष भवन, वी ब्लॉक, जी.पी.ओ. काम्पलेक्स,
आई.एन.ए., नई दिल्ली – 110023
दूरभाष : 011-24651825 | **फैक्स** : 011-24651827
ईमेल : info-nmpb@nic.in | **वैबसाईट** : www.nmpb.nic.in

नोटः– कृषि प्रौद्योगिकी का विकास फिल्ड रिसर्च लेबोरेट्री, डिफेंस रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट औरगनाईजेशन (डीआरडीओ) लेह (लद्दाख) जम्मू – कश्मीर

राष्ट्रीय औषधीय पादप बोर्ड
आयुर्वेद, योग एवं प्राकृतिक चिकित्सा, यूनानी, सिद्धा और होम्योपैथी (आयुष) मंत्रालय
भारत सरकार

सीबकथोर्न

हिप्पोफी रहमेनोइडिस

कुलः एलीगनेयेसी

- सीबकथोर्न एक झाड़ीरूपी पौधा है। इसके बढ़ने की मध्यम दर 6 से 2.5 मीटर होती है।
- इसके फूल एकलिंगाश्रयी होते हैं।

जलवायु एवं मिट्टीः

- सीबकथोर्न लगभग सभी प्रकार की मिट्टी में जैसे कि रेतीली, दोमट मिट्टी, पथरीली, आदि में उगता है।
- 13,500 फुट (समुद्र तल से) की ऊँचाई पर उगाया जाता है।

रोपण सामग्रीः

- इसको बीज तथा तने की कटिंग से सफलतापूर्वक उगाया जा सकता है।

नर्सरी तकनीक

पौध तैयार करनाः

- हल्की और अच्छी तरह से सूखी मिट्टी नर्सरी के लिए उचित होती है।
- पौध लगाने के 20–30 दिन पूर्व एफवाईएम 4 किलोग्राम /मीटर^2 की दर से मिट्टी में मिलाया जाता है।
- क्यारियां 2मीटर X 2मीटर आकार की होनी चाहिए।

पौध दर और पूर्व उपचारः

- पके हुए बीजों को बोने से पूर्व लगभग 20–25 दिन तक नमी वाली बालू रेत की तह में रखना चाहिए।

खेत में रोपण

भूमि की तैयारी और उर्वरक प्रयोगः

- प्रत्यारोपित करने से पूर्व खेत को समतल किया जाना चाहिए।
- अक्टूबर के अंत या नवम्बर के आरम्भ में 60 सेमी गहरे गडढे किये जाते हैं।
- प्रत्येक गड्ढे में 2 किलो एफवाईएम भरा जाता है।
- 15 से 20 दिन के लिए इन गड्ढों को सूर्य की रोशनी में खुला छोड़ा जाता है।
- पौधे के बीच 4–5 मीटर की दूरी रखी जाती है।
- बंसत ऋतु में खेत में 10–15 किलोग्राम एफवाईएम खाद मिलाने की सलाह दी जाती है।
- फल पकने के दौरान दो या तीन नाईट्रोजन की हल्की खुराक पौधे को देनी चाहिए।

पौधा रोपण और अनुकूलतम दूरीः

- एक या दो वर्ष पुरानी जड़ कटिंग को पतझड़ ऋतु में (अक्टूबर–नवम्बर) और (मार्च–अप्रैल) खेतों में प्रत्यारोपित करना उचित होता है।
- तत्पश्चात पौधों की सिंचाई करनी चाहिए।

सर्वधन विधिः

- निराई को निरंतर हाथों एवं यंत्रों से किया जाना चाहिए।
- जंगली घास को कुदाल या हल से तत्काल ही निकाल देना चाहिए।

सिंचाईः

- पहली सिंचाई मार्च महीने के मध्य में कली के खिलने से पहले की जाती है।
- उसके बाद, बाग की सिंचाई 10–15 दिनों के अंतराल में की जानी चाहिए।

फसल प्रबंधन

फसल पकना और कटाईः

- सीबकथोर्न का फल केवल पौधे के ऊपर पकता है।
- लद्दाख क्षेत्र में फल अगस्त के मध्य में पकता है।
- सर्दी से पहले फलों को पौधे से तोड़ लेना चाहिए।

फसल पश्चात् प्रबंधनः

- पके हुए फलों को 24 घंटों के अंदर ही उपयोग में ले आना चाहिए।
- प्लास्टिक की टोकरी में फलों को एकत्रित किया जाना चाहिए जिसकी क्षमता 10 किलो से अधिक नहीं होनी चाहिए।
- पक्के हुए फलों को ठंड़े पानी से धोने से इसकी गंध को कम करने में मदद मिलती है।
- पके हुए फलों को खराब होने से बचाने के लिए इन्हें 4–6°C तापमान पर भंडारित करने की सलाह दी जाती है।

पैदावारः

- एक हेक्टेयर में लगभग 10–15 टन फलों की पैदावार होती है।